‘मन्दिर में एक दिन’ २०२३ का परिचय

आशा रिचर्ड्स द्वारा

सिद्धयोग पथ पर, हम प्रत्येक वर्ष ८ अगस्त को, भगवान नित्यानन्द की—या ‘बड़े बाबा’ की, जैसा कि हम उन्हें स्नेह से कहते हैं—सौर पुण्यतिथि का सम्मान करते हैं। सच कहें तो बड़े बाबा के आशीर्वाद हमारे जीवन में हर दिन विपुलता में हैं। फिर भी, उनकी पुण्यतिथि के विषय में कुछ है जो अद्‌भुत रूप से मंगलमय होता है, वह दिन जब उन्होंने अपने मर्त्य शरीर का त्याग किया और परम चेतना में विलीन हो गए।

इस वर्ष, २०२३ में, सिद्धयोग विद्यार्थियों और नए साधकों को ५ अगस्त, शनिवार को इस अवसर का सम्मान करने हेतु ‘मन्दिर में एक दिन’ में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया है। इस कार्यक्रम का सीधा वीडिओ प्रसारण श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित भगवान नित्यानन्द मन्दिर से किया जाएगा। यह शनिवार को आयोजित किया जा रहा है क्योंकि उस दिन इसमें भाग ले पाना अधिकांश लोगों के लिए सुविधाजनक है। ऐसा होने पर भी, आप निश्चित ही अपने तरीक़े से ८ अगस्त के दिन का सम्मान कर सकते हैं और उसे मना सकते हैं।

‘मन्दिर में एक दिन’ के दौरान, हम अपने आपको बड़े बाबा के दर्शन में निमग्न करेंगे। हम बड़े बाबा की महिमा का गान करते हुए उसका आनन्द मनाएँगे। और पूरे बारह घण्टों के लिए जब हम सिद्धयोग वैश्विक हॉल में होंगे, हमारे पास यह अवसर होगा कि हम सिद्धयोग के इन अभ्यासों में स्वयं को निमग्न करें :

आरती—अपने इष्टदेवता की पूजा में दीपक की ज्योत के साथ आरती करना,

नैवेद्य—भगवान को भोजन अर्पित करना,

नामसंकीर्तन—दिव्य नाम गाना,

मनन-चिन्तन,

और ध्यान।

***

सन् १९७८ के अगस्त में, बाबा मुक्तानन्द भारत में, गणेशपुरी स्थित भगवान नित्यानन्द के समाधि-मन्दिर में प्रवचन दे रहे थे और तब उन्होंने कहा था कि एक दिन सम्पूर्ण संसार बड़े बाबा के समाधि-मन्दिर में दर्शन के लिए आएगा—जिसका अर्थ था कि पूरा संसार एक दिन बड़े बाबा को जानेगा। बाबा जी के शब्दों ने उन सभी सत्संगों, पूजाओं और दर्शन की भविष्यवाणी की थी जो दशकों बाद सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित भगवान नित्यानन्द मन्दिर से आयोजित होने वाले थे।

इतना ही नहीं, यहीं, मन्दिर में—बड़े बाबा की उपस्थिति में जब कुछ सिद्धयोगी इस बात के साक्षी थे—वर्ष २०१० में गुरुमाई जी ने एक संकल्प लिया था जिसके फलस्वरूप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट का पुनः आरम्भ हुआ। श्रीगुरुमाई का यह संकल्प था कि विश्वभर में सभी उनकी सिखावनियों को प्राप्त कर पाएँ—और वे सभी *एक-साथ,* एक ही समय पर, ऐसे रूप में प्राप्त करें जो सुनियोजित और प्रभावी हो और उन्हें लम्बी-लम्बी यात्राएँ न करनी पड़ें। उसके अगले वर्ष यानी बड़े बाबा की ५०वीं पुण्यतिथि यानी स्वर्णिम पुण्यतिथि पर सिद्धयोग पथ की वेबसाइट का पुनः आरम्भ हुआ।

'भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि के सम्मान में मन्दिर में एक दिन', कार्यक्रम विश्वभर में लोगों को एक झलक पाने का अवसर प्रदान करता है कि बड़े बाबा के समक्ष आना और उनके दर्शन पाना कैसा होता है, जैसा कि उनके जीवनकाल के दौरान, जीवन के सभी क्षेत्रों के असंख्य जिज्ञासुओं ने किया था। इससे उस दर्शन का वातावरण उजागर होता है—उस समय की प्रशान्ति, उसकी मधुरता और भक्ति से परिपूर्ण जिज्ञासुओं का वह भाव जिसे हृदय में धारण कर वे बड़े बाबा को भेंट अर्पण करते और विनम्रता के साथ उनके आशीर्वाद प्राप्त करते।

बड़े बाबा के दर्शन पाने के लिए लोग भारत के दूर-दूर के क्षेत्रों से यात्रा करके आते। वस्तुतः, मेरे अपने कुछ रिश्तेदार ऐसा किया करते; विशिष्ट रूप से, मेरे दादा जी ने बड़े बाबा के दर्शन करने के लिए, एक पावन महात्मा का सान्निध्य पाने के लिए कई बार मुम्बई से गणेशपुरी की यात्रा की। उनकी तरह कई लोग आए, और कभी-कभी उनकी कुछ विशिष्ट कामनाएँ और इच्छाएँ होतीं जिन्हें वे तब बड़े बाबा को बताते। प्रायः, ये कामनाएँ उनके सामान्य जीवन से जुड़ी होतीं, जैसे उनका स्वास्थ्य, धन-सम्बन्धी, या पारिवारिक विषय। शान्त मुख-मुद्रा और असीम उदारता के साथ, बड़े बाबा उन्हें वह सब प्रदान करते जिसकी लोग कामना करते। वे कई रूपों में अपना प्रसाद देते जैसे कि पत्तियों के रूप में जो उनके स्पर्श से अरोग्यदायिनी हो जातीं और चमत्कारिक रूप से जिज्ञासुओं के रोगों को दूर कर देतीं और साथ

ही, मिठाइयों के रूप में जो वे ख़ास तौर पर उन कई बच्चों को देते जो उनके आस-पास रहने के लिए लालायित रहते।

और फिर, ऐसे जिज्ञासु होते जो बड़े बाबा के पास ईश्वर को जानने की ललक के साथ आते, बड़े बाबा की महानता को समझने और अपनी दिव्य आत्मा का अनुभव पाने की ललक लिए आते। कई विद्वान बड़े बाबा के समक्ष इसलिए आते कि वे भारत के शास्त्रों का ज्ञान और गहराई से पा सकें। कई स्वामी, या संन्यासी गहन आध्यात्मिक ज्ञान पाने आते। कोई व्यक्ति जहाँ भी होता, बड़े बाबा *वहीं* उससे मिल लेते। उनके पास से कोई भी, कभी भी ख़ाली हाथ नहीं लौटा।

साथ ही, जब बड़े बाबा प्रत्येक व्यक्ति को वह सब कुछ देते जिसकी उसे सबसे अधिक चाह होती, वे पूर्ण रूप से अपने अन्तर में अवस्थित थे। उनके सान्निध्य में एक अचल स्थिरता थी, कुछ ऐसी कि जो कोई भी उनके साथ कुछ क्षणों के लिए बैठ जाता वह उस स्थिरता को महसूस कर पाता। वह महसूस करता कि बड़े बाबा बस *उसी* के साथ हैं, उसी के लिए हैं, भले ही कितने ही अन्य लोग भी उस समय उनके दर्शन प्राप्त कर रहे हों। यह एक ऐसा भाव है जो कई पीढ़ियों के साधकों के लिए आज भी सच है, उदाहरण के लिए, जिन्होंने श्री मुक्तानन्द आश्रम की यात्रा की है—व्यक्तिगत रूप से या वैश्विक हॉल में—उन्होंने उनकी उपस्थिति का अनुभव किया है।

दर्शन के दौरान बड़े बाबा अपना प्रज्ञान भी प्रदान करते। कभी-कभी वे बहुत देर तक बोलते। और कभी, उनके शब्द सूत्रों की तरह होते, या जैसा कि बाबा मुक्तानन्द ने 'चित्शक्ति विलास' में बहुत अविस्मरणीय ढंग से लिखा है, वे अपने अद्भुत सुरीले स्वर में बस इतना कहते, "हूँ।" बड़े बाबा की ध्वनि में एक साधक *सब कुछ* पा लेता। और उनके मौन में—उनके उस मख़मली मौन में जो उनके सब ओर व्याप्त रहता और वे जिस स्थान में होते, उसे वह ओत-प्रोत कर देता—इसी मौन में इन लोगों को अपने दुःख-दर्द से छुटकारा मिल जाता और वे अन्तर-शान्ति पा लेते। जो भी बड़े बाबा के पास आता उसे यही अनुभव होता, चाहे वह किसान हो या व्यापारी, गृहस्थ हो या संन्यासी, पर्यटक हो या बस किसी बात की जिज्ञासा लेकर आया हो। यही होता था, चाहे कोई बावर्ची हो, दुष्ट हो, नास्तिक हो या सन्देहवृत्तिवाला हो। ये सभी लोग बड़े बाबा के पास आते और उनके सान्निध्य में होने से सभी में परिवर्तन होता।

वहाँ हमेशा दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता—उन लोगों का जो इन सिद्ध पुरुष के दर्शन पाने की लालसा से यहाँ आया करते। जैसा कि भारत में परम्परा है, ये लोग अर्पित करने के लिए कुछ न कुछ

लाते—जो कुछ भी वे अपनी क्षमता अनुसार अर्पित कर पाते। वे दक्षिणा अर्पित करते; बड़े बाबा को ताज़े फल-फूल, धन-धान्य और वस्त्र अर्पित करते। कुछ लोग अपना कौशल अर्पित करते : संगीतकार भजन व नामसंकीर्तन की रचना करते और उन्हें गाते, शास्त्रीय नृत्य-कलाकार नृत्य करते, कवि कविताएँ सुनाते। और जिनके पास धन की प्रचुरता होती, वे बड़े-बड़े भण्डारे कराते जिससे बड़े बाबा के दर्शन के लिए आए सभी लोगों को भोजन मिल सके।

८ अगस्त, १९६१ को बड़े बाबा ने अपनी भौतिक देह का त्याग किया, परन्तु अब भी—छः दशकों बाद भी—जिज्ञासु बड़े बाबा के दर्शन कर सकते हैं और करते हैं। अनगिनत अवसरों पर, लोगों ने श्रीगुरुमाई को बताया है कि श्री मुक्तानन्द आश्रम में और गुरुदेव सिद्धपीठ में जब वे बड़े बाबा के मन्दिर में उनके दर्शन के लिए आए हैं, तब उन्हें कितने गहन, कितने गूढ़ व स्पष्ट अनुभव हुए हैं। और वे गुरुमाई जी से पूछते हैं, "मैं बड़े बाबा को अपने साथ घर कैसे ले जा सकता हूँ?"

गुरुमाई जी ने लोगों को इस प्रश्न के बहुत सुन्दर-सुन्दर उत्तर दिए, उन्हें कई सारे तरीक़े बताए जिनके माध्यम से वे अपने हृदय में बड़े बाबा की उपस्थिति का आवाहन कर सकते हैं। फिर भी, लोग प्यारभरी दृष्टि से और विनयपूर्वक गुरुमाई जी की ओर देखते व उनसे और *ठोस* तरीक़े के लिए निवेदन करते। इसलिए, गुरुमाई जी ने कहा कि बड़े बाबा की एक छोटी-सी मूर्ति सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध कराई जाए। इस तरह, लोग अपने घरों में बड़े बाबा की पूजा-अर्चना कर सकेंगे और उनके दर्शन की अनुभूति कर सकेंगे।

***

५ अगस्त को 'मन्दिर में एक दिन' के दौरान, हम सबके पास यह सुअवसर होगा कि हम श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित बड़े बाबा के मन्दिर में उनके दर्शन करें। अब मैं आपसे और थोड़ी बातें करना चाहती हूँ और लम्बे समय तक इस अभ्यास में भाग लेने के विषय में आपको बताना चाहती हूँ।

सिद्धयोग पथ पर यह हमारा सौभाग्य है कि हमें प्रत्यक्ष रूप से यह जानने का अवसर मिलता है कि दर्शन करते समय हृदय से जुड़ने का प्रयास करने से हमें इस अभ्यास से असीमित लाभ होते हैं और हमें अपने अन्तर में भगवान की अनुभूति होती है।

मैं आपको एक उपमा द्वारा समझाती हूँ। क्या यह सच नहीं है कि पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के लिए आपको बहुत प्रयास करना होता है? परन्तु ऐसा कर, जब आप पहाड़ की चोटी पर पहुँचते हैं और ऊपर देखते हैं, तब आप पाते हैं कि आप सब ओर से सुन्दर वादियों से घिरे हैं, जो चित्ताकर्षक हैं और

जिसे देखकर आपको सुकून मिल रहा है, खुशी हो रही है, आप निःशब्द हो जाते हैं। आपके विचार थम जाते हैं, ऐसा लगता है कि आपकी सत्ता का हरेक कण विस्मय से भरा है। आप ऐसा महसूस करते हैं कि आप दूसरी ही दुनिया में पहुँच गए हैं।

ठीक इसी तरह जब आप जागरूकतापूर्वक अन्तर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं और अपने हृदय से जुड़ जाते हैं, तब दर्शन होते हैं—सच्चे दर्शन होते हैं। यह ऐसा अनुभव है जो आपके मन के समझने की क्षमता से परे है, आपने अब तक जो कुछ भी देखा होगा उससे अलग है। दर्शन का अनुभव आपको दिव्यता के लोक में ले जाता है।

इतने वर्षों में मैंने दर्शन के महत्त्व के बारे में गुरुमाई जी से बहुत कुछ सीखा है, और यह भी सीखा है कि कैसे दर्शन करते समय हम कुछ व्यावहारिक तरीक़ों से अपना केन्द्रण और संकल्प बनाए रख सकते हैं। दर्शन का अभ्यास करते समय जिन चरणों का पालन करना मैंने सीखा है, अब मैं आपको वे चरण बताना चाहती हूँ :

- पहले, आप यह तय कर लें कि 'मन्दिर में एक दिन' में रहने के लिए आपके पास एक मिनट है या एक सौ मिनट हैं।
- ताड़ासन में खड़े हो जाएँ, आपके पैर एक-दूसरे के समानान्तर हों और आपकी बाहें सहजता से आपके शरीर के बगल में हों, हथेलियाँ जँघाओं की ओर हों।
- आपकी आँखों की मांसपेशियाँ सहज व तनावरहित हों और आपकी दृष्टि ग्रहणशील हो।
- इस तरह अपना निरीक्षण करते समय, आपका अवधान निःसन्देह श्वास की ओर मुड़ जाएगा।
- नैसर्गिक रीति से व स्थिरतापूर्वक श्वास लें, जिससे आपको सहजता का भाव महसूस होगा।
- हो सकता है कि आप पाएँ कि आपकी चिन्ताएँ और व्यग्रता धीरे-धीरे शान्त हो रही हैं।
- अपनी सत्ता के केन्द्र का अनुभव कर, सुनें—मन्त्र-जप स्वाभाविक रूप से होने लगता है।
- इस प्रश्न को अपनी चेतना में बनाए रखें : "कौन किसे देख रहा है?" 'योगवासिष्ठ' में द्रष्टा और दृश्य के एक होने की बात सिखाई गयी है। यह है, दर्शन का फल।

अगस्त : चमत्कारों का उपहार, दिव्य दीक्षा का उपहार। 'मन्दिर में एक दिन' में भाग लेने के लिए सभी को आमन्त्रित करते समय गौरी मौरर ने सिद्धयोग पथ पर इस माह का वर्णन इस तरह किया था। बड़े बाबा के जीवनकाल में दर्शन के बारे में लोगों के अनुभव जो मैंने सुने और दर्शन के बारे में मैंने गुरुमाई जी से जो सीखा है, उसका समापन करते हुए, मैं आपको बता रही हूँ कि : 'मन्दिर में एक दिन' के लिए मेरी उत्सुकता अपनी चरम सीमा तक पहुँच रही है। और मुझे इस बात का शतप्रतिशत यक़ीन है कि आपके लिए भी ५ अगस्त, २०२३ को सिद्धयोग वैश्विक हॉल में होने का इन्तज़ार करना अब कठिन है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।